स्वयंसेवियों के नेटवर्क और पारंपरिक दवाओं

के उपयोग से बकरियों की मृत्यु दर कम करना

TCL

यह प्लेबुक किस
समस्या का समाधान करती है ?

01

बहुत कम या कोई प्रशिक्षण और जानकारी न होने के कारण, बकरी पालकों को निवारक बीमारियों के कारण, बकरियों में अत्यधिक मृत्यु दर का सामना करना पड़ता है।

02

इसके लिए वे अक्सर बकरियों को एंटीबायोटिक दवाएँ देते हैं, जिसकी वजह से दवाओं के ज़रूरत से ज़्यादा उपयोग से बकरियों पर आने वाले समय में नुक्सानदायक परिणाम हो सकते हैं।

03

विशेष रूप से, जानवरों और उनका मीट खाने वालों में रोगाणुरोधी दवाओं का असर होना खत्म हो जाता है।

04

दवाओं के अनुचित औषध विधि के कारण बकरो के स्वास्थ्य और विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

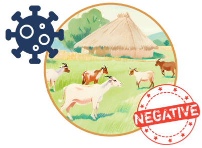

टीसीएल ने जड़ी-बूटियों से बनी दवाओं पर ज़ोर दिया है जिससे कि बकरियों में बीमारी और संक्रमण को कम किया जा सके।

इन समाधानों और बीमारी की जल्दी पहचान के बिना, मृत्यु दर 40% कम बढ़ सकती है। लेकिन उचित योजना और बीमारी प्रबंधन से, मृत्यु दर को 5% तक कम किया जा सकता है।

यह समाधान किन स्थितियों में अपनाया जा सकता है:

01

अगर आप
बकरी पालक हैं

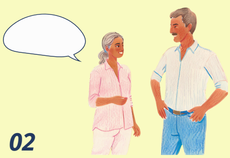

02

आप विकास के क्षेत्र में काम करते हैं और पशुपालन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन पर कार्यक्रम की रूपरेखा बना रहे हैं

03

आप सीखना चाहते हैं कि ग्रामीण भारत में पशुपालन और प्रबंधन के कार्यक्षेत्र में स्वयंसेवियों के नेटवर्क को कैसे मज़बूत किया जा सकता है

यह प्लेबुक किसके काम आ सकती है: प्रशिक्षक, सामुदायिक संसाधन व्यक्ति(सी.आर.पी), बकरी पालक

यह प्लेबुक **ट्रस्ट कम्यूनिटी लाइव्लीहुड (टी.सी.एल)** की विशेषज्ञता पर आधारित है, जो कि उत्तर प्रदेश के बाराबंकी और बाहराइच जिलों में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समुदायों और भूमिहीन/ सीमांत किसानों के बीच आमदनी बढ़ाने का काम करती है।

बकरी पालकों
के लिए क्या फायदे है?

01

बकरियों में मृत्यु दर कम होने से आमदनी बढ़ेगी

02

बकरियों का बेहतर स्वास्थ्य और मांसपेशियाँ

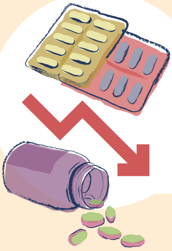

03

पशुपालक मे से सूक्ष्म-उद्यमी तैयार करना

04

एंटीबायोटिक और अन्य दवाओं के उपयोग को कम करना

पशु सखी या सामुदायिक स्वयंसेवियों का प्रशिक्षण

सखियों को बकरियों के बुनियादी इलाज के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसमें शामिल है, बकरियों का बंध्याकरण, कृमिनाशन, टीकाकरण की समयसारिणी और बकरियों की आम बीमारियों के लिए जड़ी-बूटियों वाली दवाएं।

सखियों को ऑपरेशन या गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जाता है।

मैं पशु सखी हू, और सभी पशु सखियाँ महिला सामुदायिक कार्यकर्ता होती हैं जिन्हें क्षेत्र के अन्य बकरी पालकों के साथ काम करने के लिए चुना जाता है। प्रत्येक सखी अपने **क्षेत्र के 2-3 गांवों में सेवाएं देती है।**

निम्नलिखित पर प्रशिक्षण

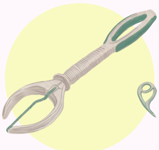

बकरों का बधियाकरण

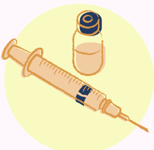

टीकाकरण कार्यक्रम
और कृमि करण

जड़ीबूटी, देसी, घरेलु उपचार

ग्रामीण उद्यमी के रूप में सखियाँ

पशु सखियों को बकरियों के लिए **प्राथमिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में प्रशिक्षित करके, एक ग्रामीण उद्यमी मॉडल** तैयार किया जा सकता है। सखियाँ बकरी पालकों को सेवाएं और जड़ी-बूटी वाली दवाएं देकर आपनी आजीविका को बेहतर बना सकती है।

	एक टीके के लिए:	₹ 10-15
	कीड़े मारने की गोली के लिए:	₹ 10-12
	फुट एण्ड माउथ बीमारी की दावा के लिए:	₹ 25-30
	प्राथमिक उचार की सवा के लिए:	₹ 30-50

औसतन: हर पशु सखी अपने क्षेत्र की **200-300** बकरिया **(60 घरो के गाँव)** के लिए सेवाएं प्रदान कर सकती है

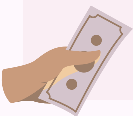

प्रति माह औसतन आमदनी:

₹ 3,000- 3,500

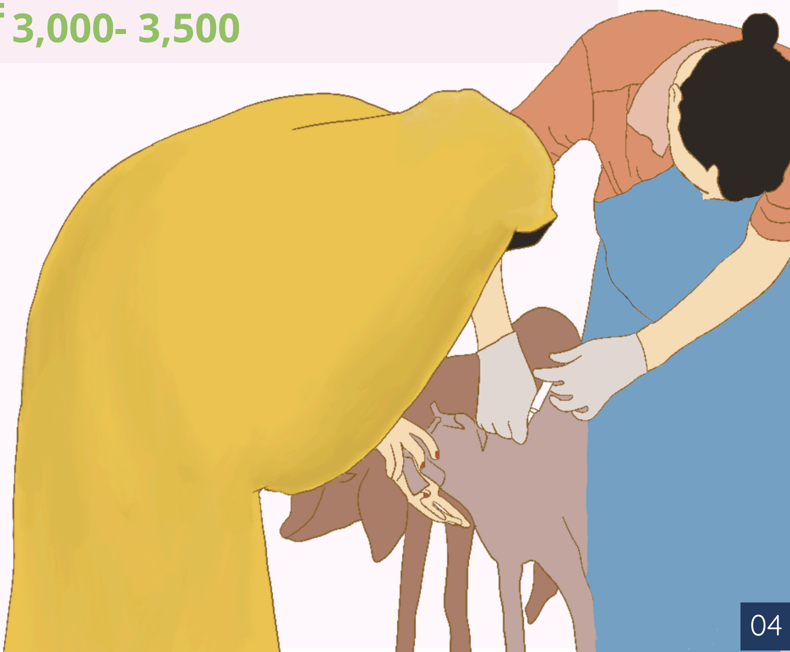

*सभी लागतें उत्तर प्रदेश के उन क्षेत्रों पर आधारित हैं जहां टी.सी.एल काम कर रही ह। टी.सी.एल द्वारा दवाएं खरीदी जाती हैं और सखियों को वितरित की जाती हैं।

पशु सखी के किट में यह चीज़ें शामिल होती हैं

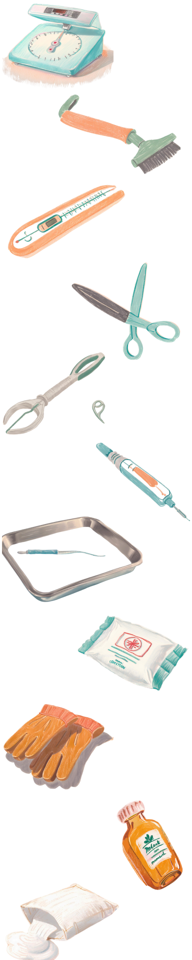

क्र. सं.	विवरण	मात्रा/किट
1	वज़न तोलने की मशीन	1
2	खुर काटने का औजार	1
3	बुखार नापने का डिजिटल थर्मोमीटर	1
4	कैंची 6"	1
5	बंध्याकरण उपकरण 9" (बुरडिज़्ज़ो कास्ट्रेटर)	1
6	सिरिंज 3 मि.ली.	50
7	16 गेज की सुईं	10
8	रुई (50 ग्राम)	5
9	जांच करने के लिए दस्ताने (100 पीस का पैकेट)	2
10	तरल बोवीटस 300 मि.ली.	3
11	डायारोक पाउडर (30 ग्राम)	10

पशु सखी के किट में यह
चीज़ें शामिल होती हैं

क्र. सं.	विवरण	मात्रा/किट
12	बोरिक ऐसिड पाउडर 10 ग्राम	*10*
13	हाईटेक सस्पेन्ड लिक्विड 1000 मि. ली.	*1*
14	पट्टी 4 इंच का पैकेट	*1*
15	सुई 20 गेज	*50*
16	ऐपेटॉनिक फोर्टे पाउडर (15 ग्राम)	*10*
17	ऐपेटॉनिक वेट बोलस (4 एस")	*3*
18	डायरेक्स बोलस	*5*
19	गैलेक्टीन वेट 4 एस"	*2*
20	पोटैशियम परमैंगनेट KmnO4 (लाल दवा) 10 ग्राम	*5*
21	दवा किट बैग	*1*
22	हिमब्लोट लिक्विड 100 मि.ली.	*3*
23	सभी उपकरण ले जाने के लिए बैग	*1*

प्रत्येक किट की कीमत लगभग
रु.*10,000* है।
इसे प्रशिक्षण के दौरान सखी को प्राथमिक समर्थन के तौर पर दिया जाता है।

कीड़ा नाशक

बकरियों के पेट और पाचन नली में कीड़े होने से उनकी भूख मर जाती है और उनका वज़न गिरने लगता है।

पहचानने के तरीके

01 बदबूदार दस्त

02 भूख कम लगना

03 आँखों से पानी आना

04 बाल झड़ना

05 वज़न गिरना, सुस्ती

06 सूजन और कमजोरी

कृमि मुक्ति का उपचार

एल्बेंडाजोल (गैर-गर्भवती बकरियों को दी गई), **फेनबेंडाजोल** (किसी भी बकरी को दी गई) और अन्य (गोली या तरल रूप में) सुबह उपवास में।

टीके

टीका कैलेंडर

बीमारी का नाम	लक्षण	टीके की शुरुआत करने के लिए बकरी की उम्र	खुराक (ml)	टीके की समयसरिणी
पीपीआर (पेस्टे दी पेटिट्स रुमीनेन्ट्सपा)	सुस्ती, बुखार, आँखों और नाक से पानी आना, मुंह में छाले सांस लेने में मुश्किल, खांसी, बदबूदार दस्त	3 महीने से अधिक होनी चाहिए	*1 ml*	*3* साल में एक बार
पॉक्स (हिंदी में जिसे माता रोग कहते है)	बुखार, थूथन, पलकों, कानों और थनों पर लाल चकत्ते/ छाले, सांस लेने में मुश्किल, सुस्ती, अवसाद, भूख न लगना, आँखों और नाक से पानी आना पलकों पर सूजन	3 महीने से अधिक होनी चाहिए	*1 ml*	साल में एक बार - दिसंबर
एफ.एम.डी (खुरपका मूपका)	नाक, जीभ या होंठ, मुंह के अंदर छाले पैरों की उंगलियों, खुरों के ऊपर छाले,भूख न लगना थानों पर छाले/ त्वचा पर गड्ढे, सुस्ती	3 महीने से अधिक होनी चाहिए	*1 ml*	साल में दो बार (सितंबर और मार्च) एक महीने बाद बूस्टर डोस
एन्टेरोटोक्साईमिया (ई.टी.वी)	दस्त,अवसाद, तालमेल न होना उलटी/ पेट खराब	3 महीने से अधिक होनी चाहिए	*2 ml*	साल में एक बार
टेटनस (इ टी वी , फरकिया रोग)	हर 6 महीने में		*0.5 ml*	हर 6 महीने में

याद रखने योग्य बातें:

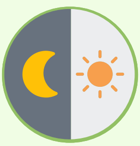

टीकाकरण केवल **सुबह या शाम** को किया जाना चाहिए।

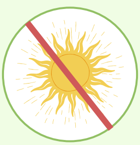

वैक्सीन को **सीधी धूप में न लगाएं।**

टीकाकरण के तुरंत बाद बकरी को **गर्मी में चराने** या किसी अन्य काम के लिए **न ले जाएं।**

उन बकरियों को टीका **न दें जो अस्वस्थ हों या गर्भवती हों।**

टीका ***2* से *8* डिग्री** सेल्सियस के बीच होना चाहिए।

हर बीमारी के टीके की अलग समय-सारिणी होती है। हर बकरी का ध्यान रखना नामुमकिन है। इसलिए, बीमारी के चक्र के अनुसार, क्षेत्र की हर बकरी को समय-समय पर अंदर टीके की दवालगाए जाते हैं।

मादा और बच्चों
का प्रबंधन

01 गर्भावस्था के समय, मादा को **सरसों के तेल की 4-5 बूंदें पिलाएँ** जिससे कि उसका पेट साफ़ हो जाए

4-5
सरसों के तेल की 4-5 बूंदें

02 गर्भावस्था के दौरान मादा को **चराने के लिए दूर तक न ले जाएँ, उसे ज़्यादा थकाएं नहीं।** बच्चा पैदा होने के तुरंत बाद, मादा को प्लसेन्टा चाटने न दें। इससे संक्रमण हो सकता है

03 बच्चा पैदा होने के बाद, उसके **खाने में मसूर और गुड़ मिलाएँ** जिससे मादा की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़े

गुड़

मसूर दाल

04 **बच्चा पैदा होने के बाद,** ध्यान रखें कि **मादा और बच्चा पास-पास रहें**

01 जब बच्चा पैदा होता है, **उसकी नाभि को बांध कर साफ़ करें**। जब बच्चा बैठे तो, **नाभि को ज़मीन छूने से बचाना चाहिए**। इससे संक्रमण हो सकते हैं।

02 नियमित तौर पर मादा के थनों को साफ़ करें जिससे कि बच्चे के दूध पीते समय और मेरे बाद संक्रमण होने का खतरा न रहे

03 जन्म के **तीन महीने बाद तक, बच्चे को जंगल या बड़े,** खुले क्षेत्र में **चराने न ले जाएँ**

04 कम-से-कम **25 दिनों तक, ध्यान दें कि बच्चा मादा के थन से दूध पिए**। थन से 45 दिन तक दूध पीना आदर्श स्थिति है

05 जूँ से बचाने के लिए, **तम्बाकू या नीम के पत्तों को पानी में भिगोकर,** बच्चे को उस पानी से नहलाएं

+ +

06 बच्चे को **सप्ताह में एक बार नहलाएं**

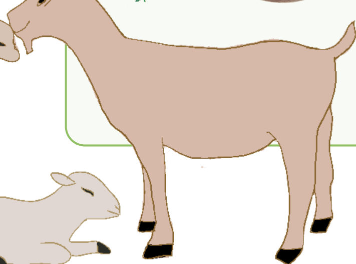

पारंपरिक पशुचिकित्सा प्रथाएँ

(इसे पोस्टर की तरह फाड़ा जा सकता है)

बकरियों के लिए जड़ी-बूटियों पर आधारित उपचार से एंटीबायोटिक दवाओं पर निर्भरता कम की जा सकती है, बीमारियों से बचाया जा सकता है, सी.आर.पी या बकरी पालकों को उपलब्ध संसाधनों के उपयोग में प्रशिक्षित करके खर्च भी बचाया जा सकता है।

बकरी की समस्या	बानाने की विधि	सामग्री
गैस या पेट फूलना	पान का पत्ता - 1 अदरक - 10 ग्राम दोनों को अलग-अलग पीस कर, मिला लें और 2 घंटे के अंदर खिला दें। हर 2 घंटे में तब तक खिलाएँ, जब तक बकरी को आराम न आ जाए।	
दस्त	20 ग्राम हर/ हर्रा पाउडर को 1 कटोरी दही में मिलाकर खिलाएँ	
भूख न लगना	औषधीय लड्डू बनाएँ: जीरा: 10 ग्राम अदरक: 10 ग्राम हल्दी: 10 ग्राम करेले के पत्ते: 2 हाथ भर कर काली मिर्च: 10 ग्राम गुड़: 20 ग्राम सब को मिक्सर में मिला लें 24 घंटे के अंदर उपयोग करें	
कब्ज़	अरंडी का तेल: 50 ग्राम दूध: 50 ग्राम तेल को हल्के गरम दूध के साथ मिलाएं	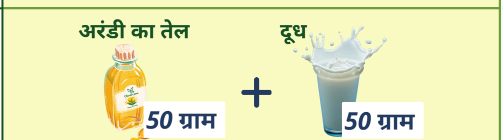
बकरी मैथुन के लिए तैयार नहीं हो पा रही है (हीट में नहीं आ रही)	जायफल के पाउडर को गुड़ के साथ मिलाएँ। 3 दिन तक खिलाएं	

पारंपरिक पशुचिकित्सा प्रथाएँ

(इसे पोस्टर की तरह फाड़ा जा सकता है)

बकरी की समस्या	बानाने की विधि	सामग्री
सर्दी, खांसी और नाक बहना	तेल बनाएँ: सरसों का तेल: 500 मि.ली. लहसुन: 50 ग्राम काला जीरा (मगरेला): 50 ग्राम लहसुन और जीरे को सरसों के तेल में गरम करें जब तक कि पूरे मिश्रण का रंग चॉकलेट रंग का न हो जाए। ठंडा करके, कांच की बोतल में सील कर दें। इसे 6 महीने तक उपयोग किया जा सकता है। उपयोग: 5 मि.ली. रोज़ दो बार	सरसों का तेल 500 मि.ली. + लहसुन 50 ग्राम + कलौंजी 50 ग्राम
गले में खराश	पान के पत्ते: 3 अरंडी का तेल: 20 ग्राम पान के पत्तों को पीस लें और अरंडी का तेल मिलाएं उपयोग: इस मिश्रण के 3 हिस्सों को बकरी को पिला दें; 1 हिस्से को उसके गले पर लगा दें	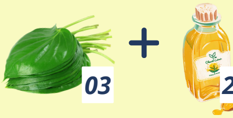 पान के पत्ते 03 + अरंडी का तेल 20 ग्राम
उच्च तापमान	तुलसी के पत्ते: 20 ग्राम काली मिर्च: 10 दाने प्याज़: 20 ग्राम तीनों को अलग-अलग पीस कर मिला लें। उपयोग: बकरी को 3 दिन तक रोज़ सुबह और शाम खिलाएँ	तुलसी के पत्ते 20 ग्राम + प्याज़ 20 ग्राम + काली मिर्च 10 दाने
बच्चा पैदा होने के पाद अगर प्लसेन्टा बाहर नहीं गिरता	राजमा: 100 ग्राम गुड़: 25 ग्राम आधे लीटर पानी में राजमा उबाल लें और उसे तब तक पीसें जब तक कि उसका जूस न बन जाए। इसमें गुड़ मिलाएँ। उपयोग: मादा को एक बार में पीला दें।	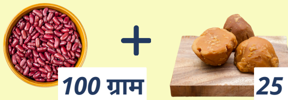 राजमा 100 ग्राम + गुड़ 25 ग्राम
बच्चा गिर जाने/ गर्भपात होने पर	5 दिन तक 1 कप ऐलो वेरा जूस पिलाएँ	ऐलो वेरा 01

WELL LABS
WATER · ENVIRONMENT · LAND · LIVELIHOODS

AXIS BANK FOUNDATION

TCL

संसाधन व्यक्ति: श्रीहरि शरणम्: 7078127127, पूजा सिंह, विषय विशेषज्ञ (पशुचिकित्सा विज्ञान), टीसीएल: 7248197257; सौरव बैनर्जी, खंड संयोजक, बाराबंकी, टीसीएल: 8709990554, सुधीर सिंह, फील्ड संयोजक: 7388405294